Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राजा राममोहन राय के सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का अध्ययन

डॉ. प्रदीप कुमार चतुर्वेदी*

* प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय स्नातक महाविद्यालय, हाटपिपलिया, देवास (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारतीय समाज को आत्मज्ञान गौरव विस्मृति तथा अंधविश्वासों के गर्त से निकलने तथा भारतीयों में मानवीय जीवन मूल्यों की पुन: स्थापना के लिए कदम उठाने का प्रयास करने वाले राजा राजमोहन राय को भारतीय राष्ट्रवाद का देवता तथा भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने उस समय भारतीयों में व्याप्त अनेक प्रकार के अंधविश्वासों तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास के किये तथा देशवासियों में प्राचीन गौरव की पुन: स्थापना करने में असाधारण सफलताऐं प्राप्त कीं।

राजा राममोहन राय के विचार आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत थे।वे मूलत धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। समाज सुधार की भावना उनकी मूल प्रेरणा थी। इसी प्रकार की भावनाओं काप्रभाव उनके राजनीतिक चिंतन पर परिलक्षित होता है। उन्के अनुसार धार्मिक सिद्धांत, लोगों के साधारण जीवन तथा दैनिक आचार-व्यवहार को काफी सीमा तक प्रभावित करते हैं। समूचे विश्व में एक ही सर्वशक्तिमान सत्ता है जो विश्व का संचालन कर रही है। यह सत्ता उदार है तथा मंगलकारी है।

राजा राममोहन राय के विचारों का अध्ययन हम निम्न बिन्दुओं में कर सकते है।-

ऐकेश्वरवाद में आस्था – राजा राममोहन राय ऐकेश्वरवाद मेंविश्वास रखते थे। उपनिषद के ब्रह्म-ज्ञान तथा इस्लाम के ऐकेश्वरवादने उनके चिंतन को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वे कर्मकाण्डों का विरोध करते थे। वे इस बात को मानते थे कि ब्रह्म अनंत एकत्व में स्थित निष्क्रिय परम सत्ता नहीं है अपितु वह संपूर्ण संसार और व्यक्तियों का सृष्टा है।

मानव मात्र की एकता में विश्वास – राजा राममोहन राय मानव मात्र की एकता में विश्वास करते थे। उनकी मान्यताओं का आधार भावनाओं पर नहीं अपितु विवेक पर था। उनके चिंतन में मूर्ति पूजा, अंधविश्वास, सांप्रदायिकता आदि का कोई स्थान नहीं था।

विश्व धर्म के प्रतिपादक– राजा राममोहन राय एक ही विश्व धर्म में आस्था रखते थे। उन्होंने स्वयं को विश्व धर्म के प्रतिपादक के रूप में प्रस्तुत किया था। वे विश्व के जीवों में आत्मा के अमरत्व को स्वीकार करते थे। उन्होंने विश्व के धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया था तथा उनके बीच मूल-भूत बातों में एकत्व की खोज की थी।

'धर्म', समाज और राज्य व्यवस्था का आधार – राजा राममोहन राय ने धर्म को राज्य और समाज व्यवस्था का आधार माना था। अगस्त 1828 में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की थी। इसका औपचारिक उद्घाटन जनवरी 1830 में हुआ था।मानवतावादी धार्मिक सिद्धांतों से प्रेरित होकर उन्होंने सती प्रथा का विरोध किया था तथा उनके आग्रह पर ही लॉर्ड विलियम बैटिंग ने सती प्रथा पर रोक लगाई थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें एक श्रेष्ठ समाजसुधाकर माना था। लोगों ने इसके विरुद्ध प्रिवि काउंसिल में अपील कर दी थी। इस अपील को राजा राममोहन राय ने खारिज करवा दिया था।

राजनीतिक विचार– राजा राममोहन राय ने विशेष रूप से परिवर्तन और समाज सुधार के लिए आवाज उठाई। उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज कंपनी सरकार से आग्रह किया कि वह मानवीय मूल्यों का सम्मान करे तथा शासन स्तर पर ऐसे कानून बनाए जिसमें भारतीयों को अधिक से अधिक सुविधाएं प्राप्त हों। उन्होंने एक न्यायपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना के लिए आवाजउठाई।

प्रेस एवं भाषण की स्वतंत्रता का समर्थन– प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति राजा राममोहन राय की प्रतिबद्दता पूरे विश्व में विख्यात थी। उन्होंने ब्रह्म-नीकल-मैगजीन, संवाद-कौमुदी तथा मिरात-उल अखबार प्रारंभ किए थे। इनके माध्यम से वे जनसाधारण के ज्ञान और अनुभव में की वृद्धि करना चाहते थे। वे मानते थे कि यह ज्ञान और अनुभव सामाजिक उन्नति में सहायक होगा। ऐसी पत्रकारिता को वे जनता को प्रचलित कानून और शासक वर्ग के आचार-व्यवहार से परिचित कराने का साधन तथा शासक वर्ग के लिए जनता को तुरंत राहत पहुंचाने का माध्यम मानते थे। वे यह भी मानते थे कि इससे जनता को शासन की अव्यवस्था से सुरक्षा प्राप्त होगी तथा क्षतिपूर्ति प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। राजा राममोहन राय यह मानते थे कि पत्रकारिता राजनीतिक समाजीकरण का साधन है। राजनीतिक व्यवस्था में जनता की सहकारिता का एवं उसकी समीक्षा का माध्यम है। वे मानते थे कि किसी भी सरकार की मजबूती के लिए प्रबुद्ध जनमत का होना आवश्यक है। इसे प्रेस की स्वतंत्रता के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार उन्होंने इस समय शासन सत्ता को ऐसे कदम उठाने के लिए प्रेरित किया जिससे व्यापक सामाजिक परिवर्तन आए तथा व्यक्ति की गरिमा की स्थापना हुई। वास्तव में वे भारत में वैधानिक सुधार आंदोलन के अग्रदूत थे।

अधिकार संबंधी विचार – राजा राममोहन राय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, संपत्ति तथा जीवन के अधिकार के महान समर्थक थे। वे व्यक्ति के नैतिक अधिकारों

का भी समर्थन करते थे। उन्होंने प्राकृतिक अधिकार सामाजिक उपयोगिता तथा मानव कल्याण की धारणाओं का समायोजन किया था। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के समर्थक थे। वे कर्म की स्वतंत्रता तथा वैचारिक स्वतंत्रता के समर्थक थे। वे विरोध प्रकट करने के अधिकार के समर्थक थे।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता का समर्थन– राजा राममोहन राय स्वतंत्रता को व्यक्तियों के लिए तो आवश्यक मानते ही थे, वे राष्ट्रों के लिए भी स्वतंत्रता को आवश्यक मानते थे।उन्होंने विश्व के विभिन्न राज्यों में लोक स्वतंत्रता की वृद्धि के उद्देश्य से चलाऐ जाने वाले राजनीतिक आन्दोलनों के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की थी।

उन्हें पूर्ण विश्वास था कि एक दिन यूरोपीय राष्ट तथा एषिया के उपनिवेष अवष्य ही अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर लेगे। स्वतंत्रता के शत्रु को अपना शत्रु मानते थे तथा उन्हें यह विश्वास था की अतत: निरंकुशता के मित्र और स्वतंत्रता के शत्रु सफल नहीं हो सकेंगे। स्पेन में संवैधानिक तंत्र की स्थापना को तथा 1830 की फ्रांस की क्रांति को उन्होंने अपना समर्थन दिया था तथा इस पर प्रसन्नता व्यक्त की थी

भारत में अंग्रेजी शासन का समर्थन– राजा राममोहन राय आदर्शवादी होने के साथ–साथ यथार्थवादी भी थे। विश्व में राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रबल समर्थक होने के साथ–साथ उन्होंने भारत में अंग्रेजी शासन का समर्थन किया था। इसका कारण यह था कि उस समय भारत समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्तर पर अंधविश्वास और पाखंडों के गर्त में फंसा हुआ था। राजा राममोहन राय यह मानते थे कि इनसे मुक्ति के लिए भारतको व्यापक सोच, साहस और वातावरण की आवश्यकता है। इस प्रकार की सोच, तर्क और विचारों को भारतीयों में आगे बढ़ाने के लिए वे अंग्रेजी शासन को तात्कालिक रूप से आवश्यक मानते थे।

निरंकुश राजसत्ता का विरोध – राजा राममोहन राय असीमित अथवा निरंकुश राजसत्ता का समर्थन नहीं करते थे। वे निरंकुश राजतंत्र का भी विरोध करते थे। वे राजा को एक व्यक्ति ही मानते थे। वे कहते थे कि राजा और ईश्वर में कोई तुलना नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापी है जबकि मनुष्य का ज्ञान पूर्ण नहीं है। राजा या मनुष्य गलती भी कर सकता है। इस प्रकार की गलती पूरे राज्य के विनाश का कारण बन सकती है। राजा राजमोहन राय गणतंत्र के समर्थक नहीं थे। वे सीमित या संवैधानिक राजतंत्र के समर्थक थे।वे मानते थे कि लोंगों को किसी न किसी सरकार के प्रकार को स्वीकार करना ही चाहिए। उन्होंने किसी न किसी रूप में शासन की शक्तियों के एक हाथ में होने के सिद्धांत को भी स्वीकृति नहीं दी थी।

राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत– मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बॅट गया था। एक राष्ट्र के रूप में भारत की पहचान धुंधली हो गई थी। राजा राममोहन राय के समग्र प्रयासों से भारत में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। भारतवासी अपनी कमजोरियों को समझने लगे तथा उन्हें दूर करने के लिए भी तैयार होने लगे। इसी से राष्ट्रवाद का पुस्फुटन होने लगा। उस समय पूरे विश्व में स्वतंत्रता के विरोध में जो कार्य हो रहे थे,उनका उन्होंने विरोध किया था। वे यूरोप के उपनिवेशों के लिए भी वैसी ही स्वतंत्रता का समर्थन करते थे जैसी यूरोपीय राष्ट्रों कोप्राप्त थी।

महिलाओं के संबंध में विचार– राजा राममोहन राय के महिलाओं के संबंध में विचार मानववादी दृष्टिकोण से प्ररित थे। महिलाओं की दुर्दशा देखकर उनका हृदय द्रवित हो उठता था। इसी कारण उन्होंने सती प्रथा का घोर विरोध किया।उन्ही के प्रयासों से तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने सती प्रथा को अवैध घोषित कर दिया था। राजमोहन राय हिंदू स्त्रियों को उत्तराधिकार प्रदान करने के पक्ष में थे। उन्होंने प्राचीन भारतीय धर्मशास्त्रों का गहन अध्ययन किया था। इस आधार पर उन्होंने यह स्पष्ट किया था कि प्राचीन समय में पति की मृत्यु के पश्चात उसकी छोड़ी हुई संपत्ति में स्त्री को पुत्र के समान और पुत्री को एक चौथाई भाग मिलता था। राजा राममोहन राय बाल विवाह के विरोधी तथा विधवा विवाह के समर्थकथे। वे महिला शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। वे प्राचीन भारत की महान नारियों जैसे गार्गी, मैत्रेइ,अपाला आदि के जीवन आदर्श से बहुद अधिक प्रभावित थे।

शिक्षा संबंधी विचार– राजा राममोहन राय पाश्चात्य शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनके मन में प्राचीन संस्कृत भाषा तथा वैदिक दर्शन के प्रति गहरा भक्ति–भाव था। इसके बाद भी वे यह चाहते थे कि भारत की उन्नति और विकास के लिए पाश्चात्य शिक्षा पद्धति को अपनाना चाहिए। वह अंग्रेजी भाषा के माध्यम से गणित, भौतिक,शरीर रचना शास्त्र आदि विज्ञानों का अध्ययन कराए जाने के पक्षधर थे। फिर भी वे संस्कृत भाषा की आवश्यकता के प्रति उदासीन नहीं थे। प्राचीन भारतीय वांगमय के अध्ययन–अध्यापन के प्रति भी वे बहुत अधिक सचेत थे। फिर भी वे यही मानते थे कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के द्धारा ही देश में जागरण की लहर पैदा होगी तथा इसके द्धारा ही आधुनिक चुनौतियों का समना किया जा सकेगा।

निष्कर्ष – राजा राममोहन राय एक ऐसेअद्धितीय महापुरुष थे जिन्होंने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि उनके क्रांतिकारी विचारों को कितना समर्थन मिल रहा है। वह जिन विचारों, मान्यताओं में आस्था रखते थे, उनको लेकर वे आजीवन संघर्ष करते रहे। उन्होंने आधुनिक भारत में प्राचीन स्वतंत्र तर्क दृष्टि तथा बुद्धिजीवी वृत्ति की पुन: स्थापना की। उन्होंने भारत में कल्याणकारी राज्य, मानववादी दृष्टि तथा न्यायिक व्यवस्था में सुधार के लिए आवाज उठाई। उनकी आस्था भारत में प्राचीन ऋषि परंपरा की पुन: स्थापना की थी किंतु इसके लिए वे आधुनिक पद्धतियों तथा अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन करते थे। वे सच्चे अर्थों में भारत में राजनीतिक पुनर्जागरण के अग्रदूत थे। वे अपने समय से बहुत आगे थे तथा भारत को भी पूरे विश्व में सबसे अग्र पंक्ति में खड़ा देखना चाहते थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. प्रो. अ.स. अल्तेकर : प्राचीन भारतीय शासन पद्धति ।
2. डॉ. पा. वा.काणे : धर्मशास्त्र का इतिहास ।
3. ए. आर. देसाई : भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि ।
4. रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय ।
5. बी.एस. नखणे : आधुनिक भारतीय चिंतन ।
6. डी. आर. जाटव : भारतीय समाज एवं विचारधारा ।
7. विपिनचंद्र : भारत का स्वतंत्रता संघर्ष ।
8. दादा धर्माधिकारी : सर्वोदय दर्शन ।
9. मो.क. गांधी : हिंद–स्वराज ।
10. विनोवा भावे : सर्वोदय और स्वराज शास्त्र ।

****